रीतिकाल

❖ **रीतिकाल के निम्नलिखित नाम हैं –**

1. अलंकृत काल - मिश्र बंधु
2. श्रृंगार काल - आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
3. कलाकाल - डॉ० रामकुमार वर्मा व डॉ० रमाशंकर शुक्ल रसाल
4. रीति-श्रृंगार काल - डॉ० भागीरथ मिश्र
5. रीतिकाल - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

❖ **रीतिकाल की धाराएं- तीन धाराएं हैं-**

मनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
।।ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ।।

रीतिमुक्त

इस धारा के कवि रीति के बंधन से पूर्णतः मुक्त हैं। अर्थात इन्होंने काव्यांग निरूपण कर ग्रन्थों की रचना न करके हृदय की स्वतंत्र वृतियों के आधार पर काव्य रचना की। इन कवियों में प्रमुख हैं-

घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर, द्विजदेव।

रीतिसिद्ध

इस वर्ग में वे कवि आते हैं जिन्होंने रीति ग्रन्थ नही लिखे किन्तु रीति की भली-भांति जानकारी रखते थे। इन्होंने अपनी रीति विषयक जानकारी का प्रयोग अपने ग्रन्थों में पूरा-पूरा किया है।

इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं-

बिहारी

रीतिबद्ध

रीतिबद्ध धारा में वे कवि आते हैं जिन्होंने रीति ग्रन्थों की रचना की। कुछ प्रमुख हैं-

चिन्तामणि, मतिराम, देव, जसवंत सिंह, कुलपति मिश्र, मण्डन, सुरति मिश्र, भिखारी दास।

(विशेषताएं या प्रवृत्तियां

श्रृंगार रस की प्रधानता
रीति ग्रंथों का का निर्माण
नायिका भेद
लक्षण ग्रंथों का निर्माण
अलंकारिकता
ब्रज भाषा का प्रयोग
मुक्तक कवि